राजोपा ग्राम पंचायत में स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं के साथ टिफिन विद दीदी कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का भाषण

सभी दीदियों को मेरा प्रणाम!

आज मुझे खुशी है कि मेरी ये दीदियाँ बड़े आत्मविश्वास से भरपूर हैं, जिनमें काम करने की ऊर्जा है, अपने गाँव और देश को बदलने का संकल्प है और आर्थिक स्वावलंबन के माध्यम से अपने पैरों पर खड़ा होकर अपने परिवार को आजीविका के माध्यम से सहयोग करने के आज तत्पर हैं।

मैं जब आपके पहल पर राजीविका मिशन की दीदियों से मिला। पहले नेहा जी से सुनता था कि हमारी दीदियाँ बहुत मेहनती हैं, बहुत काम करती हैं। कुछ प्रदेशों के अंदर मुझे कुछ अलग अलग जगह के सामाजिक, राजनीतिक नेता भी मिलते थे। कुछ प्रदेशों के महामहिम राज्यपाल स्वयं भी मिलते थे।

उन्होंने बताया कि किस तरीके से हमारे यहाँ स्व सहायता समूह के माध्यम से महिलायें आत्मनिर्भर भी हो रहीं हैं और भारत को आत्मनिर्भर करने की दिशा की ओर भी ले जा रही हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी ने आप सब के भरोसे से, आप सबके विश्वास से, यह भरोसा दिलाया है कि आने वाले समय में भी वे 3 करोड़ से ज्यादा दीदियों को लखपति दीदी बनाने में सरकार सहयोग करेगी और मुझे पूर्ण भरोसा है।

मैं आपके आत्मविश्वास को देखता हूँ, आपके कार्य करने की उत्सुकता को देखता हूँ, लगन को देखता हूँ और काम करने का जो आपका हुनर है, वह अद्भुत है। महिलायें जब काम करती हैं न, तो वह सर्वश्रेष्ठ काम करती हैं, सबसे अच्छा काम करती हैं। उनमें संवेदना भी होती हैं और बहुत समर्पण भी होता है क्योंकि उनके जीवन में समर्पण, सेवा, संवेदना उनके जीवन का हिस्सा है।

दीदियाँ दो दो परिवारों को संभालती हैं, जिस घर में पैदा हुई, वह भी संभालती हैं, उनके माता पिता हैं। जहां शादी हुई, उस परिवार को भी संभालती है, उनको भी माता पिता की तरह सेवा करती है।

अपने बच्चों को संभालती हैं और फिर यही दीदियाँ काम करके उस परिवार के 2 रोटी का इंतजाम भी करती हैं। मुझे भरोसा है, एक दिन वह आएगा, वह समय दूर नहीं जब हमारी दीदियाँ लखपति होंगी और हर गाँव में आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर अपने पैरों पर खड़ी होंगी।

मुझे भरोसा है, मैं इसीलिए अभी सुल्तानपुर में रूका था, तो सुल्तानपुर की अध्यक्ष ने मुझे कहा कि शादी होने के बाद 15 सालों तक घर से बाहर नहीं निकली। इतना बड़ा घूँघट लेती थी, घर का काम करती थी, बच्चों को पालती थी, अब घर परिवार को भी संभालती हूँ और आर्थिक रूप से पूरे घर को मजबूत कर रही हैं और मेरी और दीदियों को भी प्रेरणा देने का काम कर रही हूँ। अब आप देखो, हमारी दीदियाँ कितनी दूर जाती हैं।

अभी एक दीदी मनीषा जी या निर्मला जी मुझे बता रही थीं, वे 11 महीने की ट्रैनिंग के लिए गई थीं। मुझे रामलला दीदी ने बताया कि उनके गाँव में बाढ़ की महिला ने कहा कि उन्हें समूह बनाना है।

उन्होंने कहा कि समूह क्या होता है, राजीविका क्या होती है। उन्होंने कहा कि ये क्या है? ये तो बेकार की बात है। हमें भी ऐसा लगता था कि ऐसा कैसे संभव है?

अब उजाला डेयरी को देखो। आपकी बनाई हुई डेयरी आज 1 लाख लीटर दूध का कलेक्शन करती है। लाखशनिजा की संजु मीना ने मुझे कहा कि 15-16, 20 लीटर वे आपूर्ति करती हैं और डेढ़ सौ लीटर दूध वे खरीदती हैं और उससे मेरी इंकम 15 से 20 हजार रुपये प्रतिमाह होती है।

अब जितनी भी दीदियाँ थीं, हमारी अध्यक्ष जी प्रसादी बाई मीना जी ने बिल्कुल खुलकर बताया कि किस तरीके से कितने समूह हैं, कैसे हैं, क्या काम करती हैं। मुझे भरोसा है कि आने वाले समय के अंदर हम इन्हीं सब दीदियों के माध्यम से हर गाँव के अंदर सेल्फ हेल्प ग्रुप को मॉडल बनाएंगे और धीरे धीरे हर गाँव के अंदर हमारी महिलायें इन्हीं सेल्फ हेल्प ग्रुप्स के माध्यम से गांव में रोजगार देने का सबसे बड़ा केंद्र स्थापित करेंगी।

अब जैसे आपने अभी दीदियों के बारे में सुना, झूठ तो नहीं बोल रहीं हैं दीदियाँ। एक चप्पल बनाती हैं, एक रेडीमेड का काम करती हैं, बैंक सखी का काम करती हैं, बैंक में जाती हैं, जयपुर तक समान खरीदने जाती हैं, पैकिंग करती हैं।

मुझे भी अध्यक्ष जी से एक बात कहनी थी कि हमारी महिलायें सामान तो अच्छा बनाती हैं, बेचेंगी कहाँ से, यह चिंता का विषय है। आप निश्चिंत रहें, हम ऐसी कार्य योजना बना रहे हैं। इस कार्य योजना में आपको केवल सामान बनाना है, पैकिंग करने वाला भी और होगा, साथ ही बेचनेवाला भी और होगा, ताकि आपको कोई दिक्कत नहीं आए।

हम ऐसी कार्य योजना बना रहे है, उस कार्य योजना में हर महिला जैसे उदाहरण दूँ कि साबुन बनाना है। हमने 20 गाँव छाँटे हैं, जो साबुन बनाने का काम करेंगे। साबुन बनाने का कच्चा माल कोई कंपनी देगी। पैकिंग करने का काम वह करेगी। आपने बनाया, उसने पॅकिंग किया और बेचा। बनाने बनाने का काम आपका है।

हर ग्राम पंचायत के अंदर एक सेंटर खुलेंगे जिसमें 5 सिलाई मशीन लगेंगे। महिला वहाँ सीख जाएंगी। फिर कच्चा माल और देंगे कपड़ा। अपना काम सीखे, उसको देना। बेचने का काम वो करेगा।

पापड़ बनाने का काम, मैं दंग रह गया, कैसे कैसे काम करते हैं। पिछली बार दिल्ली के अंदर एक मेला लग रहा था सेल्फ हेल्प ग्रुप का।

सेल्फ हेल्प ग्रुप के अंदर ऑनलाइन सिस्टम से वे महिलायें हर महीने कम से कम 2 लाख रुपये का सामान बेचती थीं। मुझे लगा कि यह इंप्रैक्टिकल है, यूं ही बोल रहीं होंगी।

कल अचानक मैं शाम को घर से निकला, तो मेरी पत्नी चिप्स खा रही थी, मेरी चिप्स खाने की आदत है आलू के चिप्स। मुझे बहुत शौक है। तो मैंने 3-4 चिप्स खाए तो मैंने पूछा कि यह चिप्स किसने बनाए। तो उन्होंने बताया कि एक विडो महिला हैं, चिप्स बनाती हैं और 50-100 घरों में बेचने का काम करती हैं। वह चिप्स बनाती है, पापड़ बनाती है, आलू के पापड़ बनाती हैं, सब तरह के पापड़ बनाती हैं। अपने दो टाइम के रोटी का इंतेजाम करती हैं।

एक महिला मुझे मिली पिछली बार, उन्होंने कहा कि मैं लड्डू बेचती हूँ। मैंने कहा लड्डू खरीदते कौन हैं, आपको जानेंगे कैसे। तो उन्होंने कहा कि मैं ऑनलाइन लड्डू बेचती हूँ और धीरे धीरे प्रचार हो गया और वे मुझे ऑर्डर देते हैं। मैं लड्डू बनाती हूँ और उनके घर पर भिजवाती हूँ। कितने ? 100- 100 किलो

लड्डू बनाती है। बड़ी बड़ी जगह काम करती है। पति पत्नी दोनों काम में लग गए, 4 महिलायें और काम में लगा दी।

पिछली बार नेहा जी और हम मिले थे तो बताया कि ये आचार बनाने का काम करती हैं। अब आचार बनाने के लिए बड़ी कंपनियों से बात की दिल्ली में । जब मैं यह सारा समझ के गया तो मुझे लगा कि मैं बात तो कर रहा हूँ। इनके सिस्टम को कैसे जमाएंगे। अब लोक सभा अध्यक्ष हूँ तो आपने इतनी ताकत तो दे दी। मैंने सारी बड़ी कंपनियों को बुलाया, पूरे देश के अंदर जिनके बड़े बड़े स्टॉल हैं। और मैंने 40 आइटम छाँटे। मैंने कहा कि इन 40 आइटम हमारी सेल्फ हेल्प ग्रुप की महिलाओं से आपको खरीदना होगा। तो उन्होंने कहा कि हम खरीद लेंगे, बेचने का काम हम कर लेंगे। आप 40 आइटम बना दो, तो आने वाले समय में 40 आइटम बेचने वाला मिल गया अपने को।

कच्चा माल वो दे देगा, अपन बनाएंगे, वो बेच देगा। अब आप से अच्छा आचार कौन बना सकता है जी। कोई नहीं बना सकता है। आपसे अच्छा पापड़ कौन बना सकता है, कोई नहीं बना सकता है। आपसे अच्छा मूंगड़ी कोई नहीं बना सकता है। आपसे अच्छा मसाला कौन बना सकता है, कोई नहीं बना सकता है, आपसे शुद्ध मसाला कौन बना सकता है। इसमें कोई मिलावट नहीं होगी।

केवल मसाला बनाना है। पैकिंग का काम वह करेगा, बेचने का काम भी वही करेगा। अपन चक्की दिला देंगे सीएसआर में। एक एक गाँव में मसाला चक्की दे दी, उसने बनाया। मिर्ची वाले ने मिर्ची दे दी। धनिया वाले ने धनिया दे दी।

मैं पिछली बार धनिया के वहाँ पर गया तो धनिया बनाने वाली कंपनी से मैंने कहा कि तुम इतना बढ़िया धनिया कहाँ बेचते होंगे। मैंने कहा कि एक काम कर सकते हो, धनिया रामगंज मंडी में बहुत होता है। हमारी महिलाओं से खरीदो। उनने कहा थी है साहब! धनिया कच्चा उनको दे देंगे। वो बोर में बना दें, हम पैकिंग करके बेच देंगे।

अब कितनी महिलायें काम पर लग जाएंगी। तो ऐसे बहुत सारे काम हैं, जिन कामों को हमें करना है। आने वाले समय के अंदर माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा कि हमारी ड्रोन दीदी, सरकार ड्रोन देगी और हमारी ड्रोन दीदी आने वाले समय में लखपति बनेगी। किसानों के रूप में काम करेगी खेत में। अभी मजदूरी करती हैं, गड्ढा खोदती हैं, आने वाले समय में ड्रोन चलाएंगी।

कोई सोच सकता है कि फाइटर प्लेन चलाने वाले दुनिया के अंदर सबसे पहले कोई है, तो वह भारत की महिला है। ट्रेन चलाती हैं। हमारे यहाँ कांस्टेबल खड़ी है। 30 साल पहले कोई महिला कांस्टेबल देखी थी आपने, नहीं देखी थी न। आप वहाँ चले जाइए सीमा पर, सीमा पर रक्षा करने का काम हमारी महिला कांस्टेबल करती हैं और 30-35 साल पहले तो हमारी एएनएम भी केरल से आया करती थीं। हमारे यहाँ एएनएम भी नहीं होती थीं। सही है, गलत नहीं कह रहा हूँ मैं। सारी एएनएम केरल से होती थीं या नहीं होती थीं।

हमारी महिलायें एएनएम भी नहीं बनती थीं क्योंकि केरल में पहले एजुकेशन आ गया था, तो वे देश भर में चली गईं, पढ़ाने, नर्सिंग स्टाफ में काम करने।

अब अध्यक्ष जी की कहानी सुना दो, रामलला जी की, निर्मला जी, मनीषा जी की। इनकी कहानी क्या है कि सब इतना घूँघट लेकर जिंदगी निकल जाती है। राजीविका आई, तो उन्होंने कहा कि नहीं, हमें देश बदलना है, देश बदलने में हमारा योगदान सबसे ज्यादा होना चाहिए और इसलिए देश में प्रधान मंत्री का सबसे ज्यादा भरोसा है तो वह आप पर है, हमारी दीदियों पर है।

प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि हमारे देश की दीदियाँ एक दिन आत्मनिर्भर भारत के सपने को पूरा करेंगी और हमारी दीदियों का बना सामान दुनिया भर में बिकेगा। यह हमारा लक्ष्य है। असंभव नहीं है। आप जैसी महिलाओं ने असंभव को संभव करके दिखाया है। दिखाया कि नहीं दिखाया, आप बताइए।

राजीविका से पहले, 15 साल पहले, कोई महिला निकलती थी क्या? बैंक को समझती थी, सेल्फ हेल्प ग्रुप को समझती थी, कुछ नहीं समझती थी। बीए, एमए करने के बाद भी घर का काम करती थी और घर में सारी जिंदगी गुजार देती थीं।

कई महिलाओं ने मुझे कहा कि हम 15 साल तक घर में रहे और बीए पास कर ली, एमए पास कर ली, लेकिन घूंघट में ही काम करते रहे घर घर में ही। हूनर था उनमें, काम करने की क्षमता थी उनमें, लेकिन कोई प्लेटफॉर्म नहीं था। यह राजीविका ने एक प्लेटफॉर्म दिया है।

मुझे रामगंजमंडी में एक राजपूत महिला मिली। उन्होंने कहा कि हमारे यहाँ राजपूतों में बड़ी मुश्किल से घर से निकल पाती हैं। हमारे ससुर जी थे, हमेशा पूछा करते थे कि बहु किधर है। बाई ने आगे कहा कि वे

ऊपर सो रही हैं और वे चुपके से राजीविका की मीटिंग करके वापस आ जाती थीं। उसके घर में उसके पिताजी थानेदार, वह खुद कार चलाना जाने, घर के लोग कार चलाना जाने, सबकुछ जाने, लेकिन 15 साल से घर पर थे और इसलिए आप निश्चित भरोसा रखें, हम बदलेंगे।

हम इटावा के अंदर हर महिला को अपने पैरों पर खड़ा करेंगे। 10 से 15 हजार उसी गाँव में रोजगार देने का काम करेंगे, चाहे कुछ भी करना पड़े। घर से निकलकर और जो महिलाओं का हूनर है, उनका आत्मविश्वास है, काम करने की क्षमता है, उस क्षमता को गाँव देखेगा और देश भी देखेगा।

आने वाले समय के अंदर जो गाँव में संभव हो सकता है और आसानी से हो सकता है, पहले वह करेंगे और फिर धीरे धीरे कठिन काम करेंगे और फिर धीरे धीरे बड़ी कंपनी खड़ा कर देंगे। अब लिज्जत पापड़ क्या था, ऐसे ही था छोटा मोटा। आज लिज्जत पापड़ कितना बड़ा ब्रांड बन गया है।

यह डेयरी उजाला की स्थापना तीन साल पहले हुई, आज यह एक लाख लीटर दूध बना रही है। एक साल बाद यह दो लाख लीटर दूध बनाएगा। अपनी फैक्टरी डालेगा और कितनी महिलायें उसमें काम करेंगी। हम बहुत सारा सिस्टम जमाएंगे धीरे धीरे। आप चिंता मत करो हम देश के अंदर, मैं लगातार आपके संपर्क में रहूँगा।

एक साल के अंदर, इटावा के अंदर हर महिला को उसी के गांव में रोजगार देने का काम करेंगे, यह आप निश्चित रूप से मानना और ऐसा ऐसा काम करेंगे जो देश भी देखेगा कि आनेवाले समय के अंदर अगर मोडेल देखना है तो वह कोटा में देखो।

पहले मोडेल अभी दिखाया जाता है तो केरल वाले गवर्नर साहब ने बोला कि आओ केरल में मैं सेल्फ हेल्प ग्रुप का काम दिखाता हूँ। मैंने कहा कि महामहिम जी एक साल रुक जाइए। कोटा में आप काम देखने आना, ज्यादा दूर नहीं है। मैं बहुत सारे कामों को जानता हूँ। मैं बहुत सारा देश घूमा हूँ। अलग अलग देशों में। मैं एक ही काम सीखता था- मेरे घर में बैठी महिलाओं को 10 से 15 हजार रुपये का रोजगार कैसे मिल जाए। बस एक बात मेरे दिमाग में चलती थी।

मेरे दिमाग में बस एक बात थी और जो भी हमसे मिलता था, तो मैं उससे एक ही बात पूछता था कि ऐसी कहानी बताओ, ऐसा सिस्टम बताओं कि जिससे 10 से 15 हजार रुपये घर में बैठकर हमारी

महिलाओं को रोजगार मिल जाए और मैंने कम से कम एक हजार लोगों से संवाद किया एक हजार लोगों से। और देश के सबसे बड़ी कंपनी ने कहा कि हम 30 प्रतिशत कमिशन लेते हैं, लेकिन कोटा बूंदी की महिलाओं से कोई कमिशन नहीं लेंगे, बिना कमिशन के उन्हें हम प्लेटफॉर्म देने का काम हम करेंगे।

डी मार्ट वालों से कहा कि 40 आइटम, रिलायंस वालों से कहा ये 40 आइटम, सबसे बात कर ली मैंने। जितने भी कोटा के अंदर छात्रावास हैं, वे सब छात्रावास हमारे इटावा की हमारी दीदियों का बना हुआ साबुन खरीदेंगे। आप ऑर्डर दो, ये बना देंगे।

सूरत से साड़ी बेचने वाले थे, मैंने बात कर ली और मैंने कहा कि 4 महीने उधार देना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि ठीक है साहब। मैंने कहा कि गारंटी मेरी। यहाँ से साड़ी का ऑर्डर देगी, साड़ी उसके गाँव में आएगी, वो बेचेंगी और पैसे उनको डायरेक्ट बैंक में ट्रांसफर कर देगी। हो गया साड़ी का काम।

हर गांव के अंदर एक साड़ी का दुकान होगा और इटावा से सस्ती साड़ी आपके गाँव में मिलने लग जाएगी क्योंकि डायरेक्ट सूरत से वह साड़ी खरीदी होगी। फैक्ट्री वाला पहले होलसेल में फिर होल सेल वाला रीटेल में, ये तीन कड़ी खतम हो जाएगी। सीधा डायरेक्ट आया गाँव के अंदर पार्सल। ठक खोला और 3-4 महीने बिकने के बाद उसको पैसे दे दो।

अपनी तो इतनी जान पहचान है देश भर में, उन जान पहचान का क्या करू। जान पहचान का लाभ आप ही को मिलेगा। ये मेरी पहचान है देशभर में, मेरा लाभ आपको मिलेगा नहीं।ऐसा हम काम करेंगे। आप सारे आप योजना बना लो।

दूसरा काम एक और करना है। अभी तक वह काम सफल नहीं हुआ मेरा। मैंने हार गाँव में दादी नानी का स्कूल खोलना है। क्या, दादी नानी का। 4 हजार रूपये देंगे हम पढ़ाने का। 4 हजार रुपये। और उनको जो पढ़ी लिखी हैं, उनको दादी नानी को पढ़ाना है और उनको साइन करना सीखाना है। ताकि हर दादी नानी पढ़ी लिखी हो। बहुत मुश्किल से या दादी नानी आएंगी पढ़ने के लिए।

वे कहती हैं कि 50 साल 60 साल हमारी उम्र हो गई हैं। अब हम क्या पढ़ेंगे। उनको पढ़ाना है। दादी नानी को पढ़ा कर साइन करना सीखाना है। आपको क्या करना है 4 हजार रुपये में कुछ महिलाओं को

ढूँढना है गाँव की, जो काम करेगी, पढ़ाएंगी। बाकी जो जो पढ़ेंगी उसको एक साड़ी देंगे ताकि वह पढ़ने आए। नहीं आती हैं वो पढ़ने के लिए। बहुत मुश्किल है बहुत मुश्किल।

हमने कछौलिया में शुरू किया तो हमने सोचा कि आ जाएगी। वो किस लोभ में आएंगी। जब हमने कहा कि एक महीने में एक साड़ी देंगे। जिनकी 20 दिन प्रेजेंट लग गईं, उनको एक साड़ी देंगे, तब वो पढ़ने आईं। 20 दिन में तो कई दादी नानी पढ़ना सीख गईं और साइन करना भी सीख गईं। ऐसे सीखाना पड़ता है।

मैं एक दिन आ रहा था एक गाँव रणपुर से तो रास्ते में लुआरियाँ मिल गए मुझे। मुझे डाउट हुआ कि ये लुआरिया पढ़ते नहीं होंगे। वे इसलिए रोड पर बैठे थे। उन्होंने बोला कि हमारी कुछ मांगे हैं। मैंने कहा कि मांगे वांगे तो छोड़ो, मैंने उससे पूछा कि यहाँ पर एक भी बच्चा पढ़ता है क्या? एक भी बच्चा पढ़ने नहीं जाता था। कोई पढ़ा ही नहीं। पूरी पीढ़ी अनपढ़ हो गई। कोई 10 साल की बच्ची थी, कोई 14 साल की बच्ची पढे बिना। 2 कदम पर स्कूल था पर गए ही नहीं।

मैंने वहाँ पास वाले एक कोचिंग से कहा कि इनको पढ़ाओ और इनको रोज 5 रुपये दो, पढ़ने आएगा। जब आएंगे पढ़ने ये। वहाँ स्कूल शुरू कर दिया। 3 महीने बाद चेक करूंगा तो वहाँ सब पढे लिखे बच्चे तैयार हो जाएंगे। काम ऐसे ही करना पड़ता है मेहनत से, तब सफलता मिलती है। पर आप चिंता मत करो, आप पर मुझे भरोसा है और हम सब मिलकर इस इटावा को, इस लोक सभा को बदल देंगे। बहुत सारे काम हैं मेरे दिमाग में।

जब ये हो जाएगा तो अपन एक नर्सिंग स्टाफ तैयार करेंगे। उसको छोटा मोटा काम सीखाएंगे और नर्सिंग का किट दे देंगे। तो थोड़ा बीपी नाप लेगी। ऐसे बहुत सारे काम, नेहा जी ने हमें बहुत सारा काम दे दिया है। अब यही काम करना है। हमारे हर महिला को, हर गाँव में जाओ, तो मुझे लगे कि हर गाँव में 20 महिला यह कहे कि हम आर्थिक रूप से सक्षम हो गए हैं, मुझे यह लगेगा।

हर गाँव से हर महिलाएं जो काम करना चाहेगी, उसको 5 साल के अंदर हम काम देंगे। आप निश्चित मानिए, यह मोडेल सक्सेस होगा, सफल होगा। कोई नहीं रोक सकता है। यह मत सोचो कि क्यों नहीं होगा। यह सोचो कि होगा। सब संभव है। आपने करके बताया है दुनिया के अंदर। आप कितनी मेहनती हो, यह आप भी जानती हो। आपसे दुनिया में कोई मेहनती नहीं है। खेत खलिहान का काम करती हो, घर का काम करती हो, अभी घर का कहना बनाकर आई हो, फिर जाकर घर का खान बनाओगी। बच्चे को संभालोगी।

यह करोगी, वह करोगी, सारे काम करोगी। संसार का भी करती हो, पीहर का भी करती हो । यहाँ भी संभालती हो, वहाँ भी संभालती हो। दोनों को मैनेज करती हो। कोई नाराज न हो जाए। सब करोगी।

आप निश्चिंत रहो और आने वाली पीढ़ी हमारी पढ़ी लिखी बने। यह हमारी चिंता है। कोई अनपढ़ न रहे। हम में से कोई अनपढ़ न रहे। अच्छा बताओ सही सही बात। कितनी दादी नानी यहाँ पर उपस्थित हैं जो पढ़ी लिखी नहीं हैं। हाथ खड़ी करो। यहाँ पर लगभग 50 हैं। क्या मैं स्कूल चलाऊँगा, तो पढ़ने के लिए आओगी। ठीक है। थोड़ी थोड़ी आनी चाहिए, लिखना पढ़ना। सभी को राम राम।